Indian Streams Research Journal
ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

कमलेश्वर के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

प्रा. डॉ. अनुप सहदेव दळवी
रा.ब.नारायणराव बोरावके महाविद्यालय, श्रीरामपूर, जि.अहमदनगर.

प्रस्तावना

ग्रामीण जीवन में मानवी जन-जीवन की संवेदनाओं और मूल्यों को प्रतिष्ठित किया जाता है। ग्रामीण जीवन में विविध पर्वों-उत्सवों, परम्पराओं, अंधविश्वासों, व्यथा के अवसरों, गीतों, पुराने और नये मूल्यों आदि की प्रतिष्ठा पायी जाती हैं। ग्रामीण जीवन के रस्म-रिवाज, आचार-विचार, तीज-त्यौहार, खान-पान, आतिथ्य, अभाव, अज्ञान, संघर्ष आदि पहलू पाये जाते हैं। हम ग्रामीण जीवन का विहंगावलोकन निम्नांकित बिन्दुओं से कर सकते हैं-

१. ग्रामीण जीवन में साम्प्रदायिकता -

साम्प्रदायिकता से मानवी मूल्यों में बिखराव, अमानवीयता, धर्म तथा जातियों में उत्पन्न तनाव, संघर्ष, आपसी शत्रुता, धार्मिक कट्टरता तथा संकुचित मानसिकता आदि के परिणाम स्वरूप लोग विवेकहीन बन गये हैं। ग्रामीण जन-जीवन में एक थाली में खाना खानेवाले हिन्दू और मुस्लिम इसीं साम्प्रदायिकता के कारण

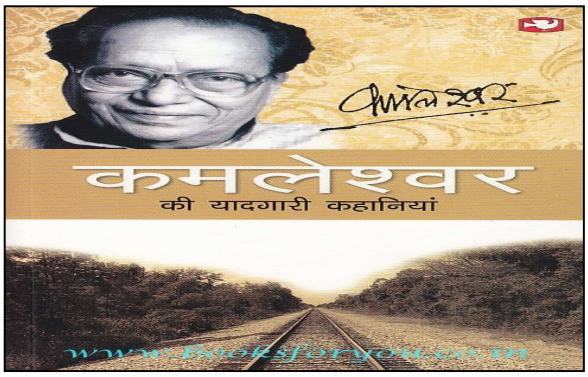

एक-दूसरे की जान लेने के लिए उतारू हो जाते हैं। साम्प्रदायिकता का जहर हिन्दू-मुस्लिमों के रगों में इस कदर घुलमिल गया है कि उसे अलग करना असम्भव प्रतीत होता है। भारतीय इतिहास में आजादी की प्राप्ति और भारत-पाकिस्तान का विभाजन महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इसीं विभाजन के परिणाम स्वरूप गाँव के हिन्दू-मुस्लिमों में कटुता उत्पन्न हुई। उनका भाईचारे का व्यवहार संघर्ष में परिणत हुआ है। दोनों के बीच सम्बन्धों की दरार दिन-ब-दिन चौड़ी होती गयी है। मानवीय सम्बन्धों की आस्था को दहला देनेवाली नृशंसता एवं पाशविकता को जन्म देनेवाली विभाजन से उत्पन्न इस विभीषिका के साम्प्रादायिक दंगों को देखकर धर्मवीर भारती का हृदय विकल हो जाता है। उन्हीं के शब्दों में विभाजन की विभीषिका मुखरित है- "आजाद होते ही देश के टूकड़े-टूकड़े हो गये। गलियाँ बॅट गयीं मुहल्ले बँट गये। जिन्दगी भर की दोस्तियाँ बँट गयीं। जिसे विश्व मैत्री करना और अहिंसा का विजय पर्व होना था वह एक सम्प्रदाय और दूसरे सम्प्रदाय के बीच पारस्परिक अविश्वास, संशय और आक्रामकता का पर्व बना गया।"[१] विभाजन से उत्पन्न पारस्परिक अविश्वास ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया है। गाँव में मन्दिर-मस्जिद का विवाद तीव्र हो रहा हैं। हिन्दू और मुस्लिम संघटनों के बीच लाठियाँ उछालती हैं, छूरें चलते हैं, खोपडियाँ फूटती हैं, आँतडियाँ निकलती है और नौजवानों की मौतों से घर-परिवार उजाड़ जाते हैं।

साम्प्रदायिकता की पाश्विकता से हिन्दू-मुस्लिमों का खून उछालने लगा। परिणामत: विभाजन की प्रक्रिया शान्तिपूर्ण रीति से नहीं हुई । लाखों लोगों को सीमा के इस पार या उस पार अपना घर-बार एवं परिवार छोड़कर शरणार्थी बनना पड़ा। कमलेश्वर के 'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में हिन्दू-मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिकता के नाम पर घटित घटनाओं में चिकवों की बस्ती के कस्बाई जिन्दगी का यथार्थ चित्रण किया है-" आजाद हिन्द फौज के किस्से इस छोटे-से शहर तक भी पहुँच गए थे और बड़ी गरमा-गरमी पैदा कर रहे थे। कुछ देर के लिए सबका ध्यान अपने भेदभाव भुलाकर उन्हीं खबरों की और लग गया था। गलियों में लड़के कहते फिरते थे 'तुम मुझे खून दो। मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"[२] अपने व्यक्तिगत जीवन संघर्ष के कारण इस कस्बों की बस्ती के लोग स्वाधीनता से अनभिज्ञ थे,

परंतु एक-दूसरे के प्रति संशय का जहर उन्हें डावाडोल कर देता है। इस उपन्यास का ताँगा चलानेवाला इफ्तिकार कहता है- "स्टेशन का रास्ता सुनसान है न । इसीलिए शायद उन्हें डर लगता है। अरे पूछों यही पैदा हुआ...यहीं रहा-बसा, अब लोग मन ही मन मुझ पर शक करते हैं। समझ में नहीं आता, यह हो क्या रहा है ?"[३] पीपलों पर भगवे फहराने लगे और मुसलमानों के घरों पर हरे झण्डे। दीवारों पर तरह-तरह की इबारतें सुबह लिखी मिलने लगीं। हर आदमी के दिल में शंका व्याप्त थी । हर आदमी दूसरे को शक की निगाह से देख रहा था।"[४] प्रस्तुत उपन्यास में धर्म और जातियों में फैलें हुए द्वेष का चित्रण दृष्टव्य है। इस्लाम के नाम पर नफरत तथा आतंक पैदा करने की प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए कमलेश्वर ने लिखा है- "इस्लाम की नजर से पाकिस्तान का बनना गुनाह है...क्योंकि इस्लाम नफरत नहीं सिखाता, पर पाकिस्तान की बुनियाद नफरत पर रखी गई है...इस्लाम जैसा मज़हब किसी मुल्क की सरहदों में कैद कैसे किया जा सकता है। कोई मजहब कैद नहीं किया जा सकता .. इस्लाम तो खासतौर से नहीं"[५] 'काली आँधी ' उपन्यास का पात्र गुलशेर अहमद जो मालती के खिलाफ चुनाव लढ़ रहे हैं। इसलिए अपने मुस्लिम लोगों के वोट के लिए उसमें साम्प्रदायिकता का जहर घोल देता है- "उनके इर्द-गिर्द वे सब ताकदें जमा हो रही हैं, जो बुनियादी तौर पर कम्यूनल हैं। वे जातियों में भेद पैदा करके वोटों के हिन्दू और मुसलमान वोटों में तकसीम कर देना चाहते हैं और चोरी-छुपे ऐलान भी कर रहे हैं कि भारत में इस्लाम खतरे में है।"[६] संक्षेप में कहा जा सकता है कि ग्रामीण जीवन में साम्प्रदायिकता की कट्टरता महानगरीय जीवन की तुलना में बहुत ही कम है, सिर्फ एक-दूसरे के प्रति संशय की प्रवृत्ति बलवती होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिन्दू-मुस्लिमों दोनों ने अपनी जान कुर्बान की, परतुं इसीं साम्प्रदायिक विभाजन के परिणाम स्वरूप एक-दूसरे के प्रति नफरत की आग धधकती है। कमलेश्वर ने लिखा है- "सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जलाया था। यह वही बस्ती है, जिसने अट्ठारह सौ सत्तावन में अग्रेंजों से लोहा लिया था। हर कौम और मजहब के लोगों ने कंधा से कंधा मिलाकर गोलियों की बौछार सीनों पर झेली थी।"[७] अतः ग्रामीण जीवन में एक-दूसरे के प्रति संशय तथा नफरत का भाव साम्प्रदायिक वैमनस्य के कारण उत्पन्न होता है। जो व्यक्ति-व्यक्ति के बीच की दरार को चौड़ी करता है।

२. ग्रामीण जीवन में जातीय एवं धार्मिक भेदभाव -

जाति-पाँति के बंधनों का ग्रामीण जीवन में कड़ाई से पालन किया जाता है। ग्रामीण जीवन की तात्विकता का चित्रण करते हुए अनिल विश्वनाथ काले ने लिखा है- "ग्रामीण संस्कृति अध्यात्मपरक होने के कारण गाँव में धर्म का स्थान बहुत महत्व का होता है। गाँवों में हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। उपासना, रूढ़ियाँ तथा अंधविश्वास विभिन्न देवी-देवताओं, लोकोत्तर- शक्तियों जैसे भूत-पिशाच में आस्था, उत्सव, पर्व, त्यौहार, अनुष्ठान, कर्मकांड आदि के साथ-साथ मन्दिर और मठों का ग्रामीण जीवन में महत्व है।"[८] भारतीय ग्रामीण सामाजिक संगटन का प्रमुख आधार संयुक्त परिवार एवं जाति प्रथा है। जाति-प्रथा गाँव के सामाजिक संस्तरण का आधार है। सामुदायिक भावना, सादा-सरल जीवन, धर्म एवं लोकोत्तर शक्तियों में आस्था, रूढ़िवादिता, प्रथा-परम्पराओं में आस्था ग्रामीण जीवन के अविभाज्य अंग है। जातीयता की प्रवृत्ति ग्रामीण जीवन में हावी हुई हैं। 'एक सड़क-सत्तावन गलियाँ' उपन्यास का जगमोहन तिवारी जातीय द्वेष के कारण नौकरी से बर्खास्त किया जाता है। उसकी जातीय विषमता की भावना अभिव्यक्त है- "भीतरी बात और है। हर स्कूल में अपना-अपना चल रहा है। असल में सरकारी स्कूलों को छोड़कर कौन-सा स्कूल है जिले में, जो किसी जाति विशेष के अधिपत्य में न हो। ब्राह्मणों के अपने स्कूल है, कायस्थों के अपने, अहीरों के अलग, अग्रवालों के अलग, हर जगह जाति का सर्प फन-फैलाकर बैठा है। इस बार मैं उसका शिकार बन रहा हूँ।"[९] इसीं उपन्यास का पात्र शिवराज के सम्बन्ध में सरनामसिंह लोगों को कहता है- "आखिर बामन का बेटा है...इसके तो पैर तक छूना पुन्न है।"[१०] ग्रामीण जीवन में धार्मिक कट्टरता परिलक्षित होती है- "अगर कोतवाल और कलेक्टर की सी.आय.डी. ने धर्म के मामले में टाँग अड़ाई तो तोड़ दी जाएगी।"[११] धर्मान्धता तथा जातीयता की लहर के कारण ग्रामीण जीवन की सामुदायिक भावना डावाडोल हो गयी है। स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दू और मुस्लिमों की धार्मिक भावना अधिक कट्टर हो गयी है। 'लौटे हुए मुसाफिर ' उपन्यास में कमलेश्वर ने धार्मिक कट्टरता का बयान किया है- "आपसी भाईचारे की भावना भीतर ही भीतर सिमटकर समाप्त-सी हो गयी थी । दोनों जातियों ने अपने हिन्दू और मुसलमान होने का एहसास बढ़ता जा रहा था। हिन्दू-शायद अपने को एकाएक ज्यादा हिन्दू समझने लगे थे और मुसलमान अपने को जादा मुसलमान।"[१२] कमलेश्वर ने धार्मिक कट्टरता से दूर रहकर शान्तिपूर्ण जीवन के लिए सहयोग की आवश्यकता जतायी है। इसीलिए वे धर्मान्ध प्रवृत्तियों की आलोचना करते हैं। इस्लाम की जातिवादिता पर प्रहार करते हुए उन्होंने लिखा है- "इस्लाम की रूहानय आत्मा से जो सूफी उदारवाद जन्मा था, उसे इस्लाम के इन कट्टर ब्राह्मणों ने हिकारत से नामंजूर किया था, खुद इन्होंने हिन्दुस्थानी इस्लाम को वर्णाश्रमवाले साँचे में ढाल लिया नहीं तो क्या वजह थी कि जो भी हिन्दुस्थानी कलमा

पढ़कर मुसलमान बना। मुगालिया सल्तनत में वह खादिम और चौबेदार ओह दे से ऊपर नहीं जा सका यही था। मुसलमानों का जातिवाद इसी जातिवाद के चलते सदियों पहले हिन्दू हारा था और इसी के चलते मुल्की मुसलमान की मदद से मुगल महरूम रहे थे जैसे हिन्दू क्षत्रिय का साथ हिन्दू दलित ने नहीं दिया था, वैसे ही मुगल क्षत्रिय का साथ मुल्की मुस्लिम दलित ने नहीं दिया।"[१३] अत: स्पष्ट है कमलेश्वर ने सौहार्दपूर्ण जीवन से मानवीयता धर्म की स्थापना कर जीवन में व्याप्त धर्मान्धता तथा जातीय विषमता को जड़ से उखाड़ने का प्रयास अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है।

३. ग्रामीण जीवन में अंधविश्वास -

हमारे देश के गाँव रूढ़िवादी परम्परा से ग्रस्त होने के कारण उन्हें अनेक अंधविश्वासों एवं कर्मकाण्डों ने जकड़ लिया है। ग्रामांचलों के अज्ञानी, अशिक्षित, अल्पशिक्षित तथा शिक्षितों में भी अंधविश्वास के दर्शन होते हैं। डॉ.सरिता शुक्ला ने अंधविश्वासों के दूरगामी घातक परिणामों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि- "अंधविश्वास और भ्रांतियाँ भी जनमानस को अवनीति के गर्त में गिरा रही हैं। अंधविश्वास भारतीय समाज के लिए घातक सिध्द हो रहा है। इनके रहते हुए परिवर्तन की बात सोचना भी पाप है। मध्यवर्गीय व्यक्ति यदि एक तरफ संस्कारों, प्राचीन रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है तो दूसरी तरफ अंधविश्वासों के दलदल में भी फँसा हुआ है।"[१४] इसीं के अनुसार कमलेश्वर के 'समुद्र में खोया हुआ आदमी ' उपन्यास की पात्र रम्मी ने अपने खोये हुए पुत्र को लौट आने के लिए भगवान से प्रार्थना करकर अपनी पसंद की चीजें खानी छोड़ दी थी । वह प्रार्थना करती है- "उसे मिठाई बहुत पसन्द थी...चुरा-चुराकर चीनी खाता था। हे भगवान ! आज से चीनी तुम्हे अर्पण। मेरा बीरन जीता-जागता लौटा आए तब तुम्हारी पूजा करके चीनी छुऊँगी। मेरी सुनना, हे प्रभो।"[१५] ग्रामीण जीवन में पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, मोक्ष प्राप्ति आदि के सम्बन्ध में अनेक अंधविश्वास प्रचलित हैं। ' सुबह दोहपहर शाम ' उपन्यास की बड़ी दादी अपने अंतिम समय में आँखे बन्द करने के पूर्व सन्तो को तुलसीदल और गंगाजल माँगती है तो पुजारी पुत्र वंश का दीपक होने के कारण सन्तों को गंगाजल पिलाने का विरोध करता हुआ। कहता है-" मालकिन ! इससे पिण्ड-मुक्ति नही होगी। जब बेटा और पीता दोनो पुरुष मौजुद हैं तो अंतिम नेम यहीं करेंगें।"[१६] 'वही बात ' उपन्यास में नकुल अपने आदिवासियों के अंधविश्वासों का प्रतिपादन करते हुए कहता है- "सच पूछिये तो इसमें मेरी जातिवालों का अंधविश्वास ज्यादा काम कर रहा है, स्वार्थ नहीं उन्हें यह लगता है कि नदी के पानी को बाँधने से उन पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पडेंगे। इसलिए अंधविश्वास के तहत वे विरोध कर रहे हैं।"[१७] 'अम्मा' उपन्यास की नायिका शान्ता को सती जाने के लिए विरोध करनेवाले कुन्दलाल को पंडित सती होने को पुण्य कर्म मानकर सती प्रथा का समर्थन करते हैं- "सती मैया के पुण्य कार्य में बाधा मत डालिए, बाबू कुन्दनलाल जी !...अपने भाग्य को सराहिए बाबूजी, जो आपके घर ऐसी सती लक्ष्मी आई...बोल सती मैया की जय !"[१८] ग्रामीण जीवन के अंधविश्वासों का प्रतिपादन करते हुए डॉ.सुरेश सिन्हा ने लिखा है- "ग्रामीण जीवन के संदर्भ में तो यह बात और भी सच है कि, वहाँ बाह्याचार, छुआछुत, जातीयता, रूढ़ि सत्यों की स्वीकृति, देवी देवताओं की स्वार्थमयी पुजा, अंधविश्वास आदि धर्म के एक मात्र प्रतीक रह गये हैं।"[१९] अत: स्पष्ट है ग्रामीण जीवन में धर्म के नाम पर अनेक अंधविश्वास लोगों में विद्यमान हैं। लोगों के बीच विद्यमान अंधविश्वासों को कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उद्धृत कर अंधविश्वासों का निर्मूलन करने का प्रयास किया है। कमलेश्वर ने बेटी के जन्म का समर्थन कर भारतीय संस्कृति की अनुसार पुत्र की अनिवार्यता का उन्होंने विरोध किया है। उन्होंने स्पष्टत: लिखा है- "मानू मेरी और गायत्री की एकमात्र संतान है। हमें कभी लगा ही नहीं कि हमारे बेटा नहीं है। बेटे की जरूरत एक सनातनी और पौराणिक वर्णवादी को जरूरत है। यह अब पूरी तरह नहीं तो भी लगभग बेमानी हो चुकी है। आज के बदले हुए आर्थिक, सामाजिक ,सांस्कृतिक परिवेश में लड़कियाँ-बेटियाँ अब एक ऐसी सच्चाई हैं, जो हमें अधिक सहज और उदात्त मूल्य देती है।"[२०] अत: स्पष्ट है जन-जीवन में व्याप्त अंधविश्वासों को कमलेश्वर ने अपने जीवन के आचार-विचार, अनुभवों तथा जीवन में घटित साक्षात्कारों से मिटाने का प्रयास किया है।

४. चुनावी राजनीति से ग्राम के सामूहिक जीवन में बिगड़ाव -

स्वतंत्रता के बाद गाँवो में राजनीतिक जीवन की लहर पंचायत राज, वयस्क मताधिकार, संविधान के धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक स्वरूप आदि विभिन्न राजनीतिक कार्यों से आई हैं। आज ग्रामीण लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं। आज गाँवो में अलग-अलग राष्ट्रीय-प्रादेशिक पक्षों के संघटन कार्यरत हैं। ग्रामों में राजनीतिक गट-तटों के कारण संघर्षमय वातावरण दिखाई देता है। ग्रामीण जीवन में चुनावी प्रणाली विभिन्न विसंगतियों से युक्त है। ग्रामीण जीवन की चुनावी राजनीति की विकराल स्थिति को उजागर करते हुए ए.आर.देसाई ने लिखा है- "स्वाधीनता के बाद भारत के ग्राम जीवन को उन्नत करने के जो प्रयत्न हुए उसका परिणाम विपरीत निकला। सबसे अधिक तोड़ा चुनावने, चाहे वह लोकसभा, विधानसभा का चुनाव हो या ग्रामपंचायत चुनाव हो, जहाँ-जहाँ प्रजातांत्रिक पध्दति का प्रवेश हुआ, वहाँ-वहाँ उसने विष

बीज बोया । फल स्वरूप राजनीति के दाँव-पेचों द्वारा गाँव के जीवन में घुसकर उसे विषाक्त बना दिया।"[२१] स्थानिक पंचायतों का चुनाव गाँव में दलबंदी, भ्रष्टाचार, मूल्य विघटन एवं विभिन्न सम्बन्धो को लेकर तनाव उपस्थित हुआ है। गाँव के नेता भी अवसरवादी और भ्रष्टाचारी बन गये हैं। 'काली आँधी ' उपन्यास की नायिका मालती राजनीति में सक्रिय हुईं। उसके एक नेता द्वारा चुनावी राजनीति के कारण ग्रामजीवन की स्थिति डावाडोल हो गयी है। स्वार्थान्ध राजनेता अपने कुटिल षड़यंत्रों से ग्रामीण लोगों को फँसाकर उनके वोट हासिल करते हैं। 'काली आँधी ' उपन्यास की नायिका मालती की चुनावी राजनीति का परिचय उनके कथन से होता है-"मेरा अनुभव है कि हमारे ग्रामीण अब भी उतने ही भोले हैं। गैर जिम्मेदार नेताओं से वे जरूर परहेज करते हैं।"[२२] ग्राम जीवन में वोट के बदले लेन-देन के व्यवहार हो रहे हैं। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ ' उपन्यास पात्र मंगल अपना वोट देने के विवशता का बयान करता है- "हथियार करारे किराए पर मिले हैं। इत्ता रूपया कहाँ था? पेशगी की माँग थी, देना पड़ा।"[२३] भारत-पाकिस्तान विभाजन की राजनीति से ग्राम जीवन की आत्मीयता की भावना खण्डित हुई। 'लौटे हुए मुसाफिर ' उपन्यास का पात्र सत्तार अपनी खोयी जिन्दगी की यादों को उजागर करते हुए कहता है- "लेकिन वे कहानियाँ खो गईं। पाकिस्तान क्या बना, सब बिखर गया। आदमी के हौसले बिखर गये, मन की मुरादें टूट गईं, दिलों के रिश्ते खत्म हो गये।"[२४] अत: स्पष्ट है कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से ग्रामीण जीवन में चुनावी राजनीति के परिणाम स्वरूप उत्पन्न, तनाव, संघर्ष, राजनेताओं की स्वार्थी वृत्ति, ग्राम जीवन की डावाडोल स्थिति, चुनावी प्रक्रिया में लेन-देन के व्यवहार टूटते रिश्ते तथा घट़ती आत्मीयता का यथार्थ चित्रण साकार किया है।

५. ग्रामीण जीवन में विधवा की दयनीयता -

ग्रामीण जीवन में प्रचलित रूढ़ि-परम्पराओं के कारण अनेक प्रकार के अंधविश्वास रूढ़ है। नारी के विधवा होने के साथ उसका तन-मन तथा अस्तित्व ही विधवा हो जाता है। समाज और रिश्ते-दारों के द्वारा उसकी उपेक्षा की जाती है। समाज द्वारा उसका शोषण किया जाता है। डॉ.क्षितीज धुमाळ ने विधवा की दयनीयता की स्थिति उज़ागर करते हुए लिखा है-" वैधव्य नारी जाति के लिए अभिशाप माना जाता है। भारतीय संस्कृति में विधवाओं का जीवन अत्यन्त उपेक्षित, तिरस्कृत, अशुभ, घृणात्मक माना जाता है। भारतीय समाज सुधारकों ने इस अमानवीय स्थिति को परिवर्तित करने का प्रयत्न किया है। विधवा पुनर्विवाह का कानून पारित कराया गया है। परतुं आज भी ग्रामांचलों में परम्परागत विधवाओं और आधुनिक विधवाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय है।"[२५] विधवा की दयनीय स्थिति का चित्रण कमलेश्वर के 'अम्मा' उपन्यास में दृष्टव्य है। उपन्यास की सास सरस्वती द्वारा शान्ता को बेटी के रूप में मिलेनवाला प्रेम अपने बेटे के मरते ही परम्परागत सास के रूप में परिनत हुआ। वह दाँत किटकिटाते हुए उसके बालों को दोनों हाथों से झिझोड़कर जमीन पर पट़कर पागल की तरह उसकी पिटाई करती हुई कहती है-"हत्यारिन, खा गई मेरे बेटे को।"[२६] वह शान्ता को अपने बेटे प्रवीन के लाश को धूने के लिए भी मना करती है- "हाथ मत लगा मेरे बेटे को डायन... अब तो पड़ गई होगी तेरे कलेजे को ठंड़क-खा गई मेरे लाल को।"[२७] ग्रामीण जीवन में विधवाओं के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। पति के मरने के बाद शान्ता को उसकी सास द्वारा अधमरा कर दिया जाता है। उसके रिश्तें का भाई सलिम शान्ता की उद्विग्नता की अवस्था देखकर सकते में आ जाता है-" आँखों में छलछलाते आँसू दिल में गहरा दुख लिये वह शान्ता को देख रहा था, जिसे उसकी सास इस तरह झँझोड़ रही थी जैसे खूँखार भेड़िया खाने से पहले किसी मेमने को झँझोड़-झँझोड़कर अधमरा कर देता है।"[२८] की दृष्टि से उपेक्षित होने के कारण उसे कोई साथ नहीं देता है। परिणामत: घूट-घूट कर जीना विवशता बन जाती है। 'आगामी अतीत' उपन्यास की नायिका चंदा अपना पति लंगड़ा हरकरा हरचरण के मरने के बाद अपनी बेटी चाँदनी को लेकर भाग-दौड़ करती है। उपन्यास का पात्र एक बूढ़ा आदमी कमलबोस को चंदा की जानकारी देते हुए कहता है- "हरचरण की मौत के बाद सात-आठ महीने वह यहाँ रही। आमदनी का कोई जरिया था नहीं और जैसा उसका सुभाव बन गया था, कोई उसका साथ नहीं देता था। आखिर काम-धाम की तलाश में वह यह जगह छोड़कर नीली घाटी चली गयी।"[२९] ग्रामीण जीवन की विधवाएँ भारतीय संस्कृति की नारी आदर्शता की चौखट़ में कैद होकर अपने वैधव्य में अपने स्त्रीत्व की रक्षा करती है। आज विधवा विवाह के लिए मान्यता होकर भी कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित विधवाओं का पुनर्विवाह का चित्रण नहीं मिलता है। शायद ग्राम जीवन में विधवा विवाह की मान्यता स्वीकार्य नहीं है, इसका संकेत देने के लिए विधवा विवाह का जिक्र कमलेश्वर ने नहीं किया होगा।

६. ग्रामीण जीवन में दो पीढ़ियों के बीच संघर्ष -

ग्रामीण जीवन में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के लोगों में वैचारिक अनबन होने के कारण परम्परागत और परिवर्तित मूल्यों में टकराहट होती है। पुरानी पीढ़ी के लोग रूढ़ि-परम्परा के पक्षधर हैं तो नयी पीढ़ी के लोग रूढ़ि परम्परा के खिलाफ है। इसलिए इन परस्पर विरोधी विचारधारा के कारण इन दो पीढ़ियों के बीच वैचारिक संघर्ष होना स्वाभाविक है। दो पीढ़ियों के संघर्ष के परिणाम स्वरूप परिवार में आदर्श और यथार्थ का द्वन्द्व प्रारंभ होकर रिश्तों में घटती आत्मीयता तथा बढ़ती औपचारिकता के दर्शन हो रहे हैं। परिणामत: संयुक्त कुंटुंब की परम्परागत प्रथाएँ विघटित हो रही है- "काँच की बर्तन की तरह टूट रहा है। माँ-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी आदि जैसे पवित्र रिश्तों भी संयुक्त परिवार के विघटन से टूट उठे हैं।"[३०] आज परम्पराओं के विरोध एवं मूल्यों के अवमूल्यन से ग्राम जीवन में नैतिकता की नयी मान्यताएँ स्थापित हुई हैं। कमलेश्वर के उपन्यासों में 'सुबह दोपहर शाम ' उपन्यास की बड़ी दादी अपने परम्परागत विचारों के अनुसार अँग्रेजों की नौकरी करना परिवार के साथ गद्दारी करना मानती है। वह जसवंतसिंह को कहती है- "तब क्यों अंग्रेज बहादूर की गुलामी करने जा रहा है ? तुझे भी क्या अपनी बुआ-फूफाजी की गद्दारी अच्छी लगने लगी है।"[३१] प्रतिक्रिया स्वरूप जसवंतसिंह अपने देश की प्रगति के आधुनिक तथा विकासात्मक अपने विचारों को प्रस्तुत कर बड़ी दादी को समझाने का प्रयास करता है- "उन्हें कैसे बताए कि वह अंग्रेजों के लिए देश से गद्दारी करने नहीं जा रहा है, वह सिर्फ रेलगाडी के महकमें में काम करने जा रहा है - यह महकामा ऐसा है जिससे नई जिन्दगी देश में आएगी... रेलें चलेगी तो देश एकता के सूत्र में जुड़ जाएगा। अपने गाँव का आदमी दूसरे गाँव तक पहुंचा करेगा- दूसरे गाँव का वासी अपने गाँव तक आ सकेगा।"[३२] 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का नायक श्यामलाल अपने परम्परागत विचारों के अनुसार अपनी बेटी तारा को शाम के सात बजने के पहले घर में न आने के कारण खड़े बोल सुनाई देता है- "अब यह सब इस घर में नहीं चलेगा । सात बजे तक बाहर रहने की जरूरत नहीं। मैं समझाता कि तुम खुद सोचोगी।"[३३] समीरा बड़ी बेटी होने के कारण परिवार का गुजारा करने के लिए उसे काम करना आवश्यक लगता है। इसलिए अपने पुरानी पीढ़ी के विचारों के समर्थक पिता को समझाती है- "पर बाबूजी सात बजे तो दूकानें बन्द होती हैं। पहले कैसे आ सकती हूँ।"[३४] प्रतिक्रिया स्वरूप श्यामलाल ने अपने स्वाभिमानी भावों को जागृत कर अपने परम्परागत संस्कारों से तारा को कहता है- "तो छोड़ दे काम हमें नहीं जरूरत है। मैं मर नहीं गया हूँ, आखिर सबको पालता ही रहा हूँ।"[३५] अत: स्पष्ट है, कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में दो पीढ़ी के संघर्ष को उजागर कर दोनों की वैचारिक अनबन को उजागर किया है। काल परिवर्तन के साथ यह संघर्ष अधिक तीव्र हो रहा है।

७. ग्रामीण जीवन में शोषण नीति -

आज ग्रामीण जीवन अज्ञान, अंधविश्वास तथा विवशताओं से पीड़ित है। परिणामत: नारी शोषण, किसान शोषण, किसान-मजदूर शोषण, दलित शोषण ग्रामाचलों में हो रहा है। साहुकार गरीब लोगों को कर्ज देकर कई गुणा कर्ज जुल्म कर वसुल लेता है। 'रेगिस्तान' उपन्यास का नायक विश्वनाथ अपने चाचा चंदनलाल की हड़प नीति का पर्दाफाश करता है- "असल में बाबूजी बहुत सीधे थे। ताऊ चंदनलाल जमींदार के करिंदा थे, इसलिए उनका दबदबा बहुत था। उन्होंने गावँवालों पर ही अत्याचार नहीं किए थे बल्कि खुद अपने छोटे भाई बनवारी लाल को भी नहीं बख्शा था। धीरे-धीरे उन्होंने उसके बाबूजी का हिस्सा भी दबा लिया था। और उसके बाबूजी अंतिम दिनों में खुद अपने घर में बेदखल होकर रह गये थे।"[३६] ग्रामीण जीवन में उच्चवर्गीयों के द्वारा गरीबों की जमीन-जायदाद हड़प की जाती है। समाज की पाशविक वृत्ति की नारी शिकार हुई हैं। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ ' उपन्यास की नायिका बंसिरी को रंगीले के द्वारा खरीदने पर वह आत्मक्लेष की भावना अभिव्यक्त करती है- "अब नहीं सहेगी, बहुत हो लिया । साँप का ज़हर नहीं मरता। इतना विष है इसके काले दिल में...। बेईमान, दगाबाज़, बेवफा ! एक बार भी बीते हुए दिन याद नहीं आते ? हर जगह मेरी इज्ज़त इसके लिए खिलौना रही है - इसके लिए औरत ही हूँ मैं। सराय में बिकी हुई औरत- "जब तक पूरे रुपये नहीं चुकाता यह, तब तक तुम रखो इसे ! क्या समझा था घास पात ! रहम किया था मेरे ऊपर । तेरे रहम का बदला ... सड़-सड़कर मरेगा... कैसा डरावना हो गया हैं। शक्ल से मनहूसियत टपकती है।"[३७] ग्राम जीवन में असहाय नारी का शारीरिक, मानसिक, चारों ओर से शोषण किया जाता है। ग्राम जीवन में साहुकार तथा पूँजीपति गाँव के लोगों के अज्ञान का लाभ उठाकर उनका शोषण करते हैं। कमलेश्वर ने अपने उपन्यास के माध्यम से ग्रामीण जीवन की प्रचलित शोषण नीति तथा विकृतियों का चित्रण कर ग्राम जीवन की हड़प नीति पर प्रकाश ड़ाला है।

८. ग्रामीण जीवन के उदात्त जीवन मूल्य -

ग्रामीण जीवन में ' अतिथि देवोभव ' मानकर अतिथि का सम्मान किया जाता है। अनेक उदात्त जीवन मूल्यों का दर्शन हमें ग्रामीण जीवन से होता है। प्रकृति का प्रभाव ग्रामीण निवासियों के जीवन पर निरूपित करते हुए अनिल काले ने

लिखा है- "ग्रामीण निवासियों के जीवन के निर्माण और स्वरूप निर्धारण में प्रकृति सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह न केवल उनकी सहचरी होती है, बल्कि जीवन की दिशा निर्धारित करनेवाली प्रेरणा देनेवाली, आजीविका देनेवाली और कभी-कभी विनाश करनेवाली तथा शोक-दुःख उत्पन्न करनेवाली एक महान शक्ति के रूप में होती है।"[३८] कमलेश्वर ने 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ ' उपन्यास में अपने मैनपुरी कस्बे का प्राकृतिक जीवन यथार्थता से अंकित किया है - "छतपर इमली के पेड़ों से पानी झरता रहता, उसी के नीचे भुट्टे भुँजते। बरसते पानी की पेंगों पर किसी इल्हेत का पौरुष भरा स्वर जाता-बाँध सिरोही दोनों भिरि गए, खटखट चलन लगी तलवार। और बादलों की सेना गड़गड़ाकर जुझ जाती।"[३९] मैनपुरी जीवन का जीता जागता चित्रण कमलेश्वर ने अंकित किया है। 'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास की नसीबन विभाजन के दौरान बिखरे हुए मुसलमान बच्चे बड़े होकर दूबारा चिकवों की बस्ती में आते ही ग्राम संस्कृति के अनुकूल उनका आतिथ्य करती है - "नसीबन दौडकर गई थी और जो भी मिला था, उठा लाई थी- बोरा, फटी दरी, मैली चादर वगैरह और बोली, लो, इन्हें यहीं पेड़ के नीचे बिछा लो और आराम करो।"[४०] ग्राम जीवन में अतिथ्य की उदार भावना के साथ सामूहिक जीवन की उदार नीति भी दृष्टव्य है। 'तीसरा आदमी' उपन्यास का नायक नरेश अपने सहजीवन तथा सामूहिक भावना का परिचय देता हुआ कहता है- "घर में जूतें तो सबके अलग-अलग आते थे, पर चप्पलें कुछ इस तरह खरीदी जाती थी कि जिनसे एक-दूसरे का काम भी निकल जाए। बाबूजी की चप्पल मेरे काम आ जाती थी और बहनों की चप्पले जरूरत के वक्त माँ की इज्जत रख लेती थीं। बहनों के पास साड़ियाँ भी ऐसी ही थीं जो बदल-बदलकर एक-दूसरे के काम आती रहती थी।"[४१] एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता का व्यवहार ग्रामीण जीवन में पाया जाता है। कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में नीति मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास के महाराज सुरेन्दसिंह के द्वारा काकातुआओं की जोड़ी पर कीमती झूमर तोड़ने कारण जब गोली चलाई जाती है तब रानी माँ कहती है कि धन-जायदाद मिल सकती है, परतुं इन मासूम पंछियों की जान कैसे लौटा सकती है ? यह प्रश्न कर मानवीयता की नीति मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है-" महाराज, हमें अपने मैके से जमीन-जायदाद मिली हुई है, हम उससे आपको एक नहीं कई झूमर खरीद कर दे देते, अब भी दे सकते हैं। लेकिन क्या आप हमें इन मासूम पंछियों की जिन्दगी लौटा सकते हैं ?"[४२] रानी माँ का प्रश्न मानवीयता की स्थापना कर उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। हमारे देश के आदिवासी सुंदर कलाकृति के द्वारा अपने कलात्मक जीवन परिचय देते हैं। 'वही बात' उपन्यास में आदिवासियों द्वारा बनाई हुई लकड़ी की मूर्तियाँ देखकर समीरा अवाक् हो जाती है। "समीरा ने एक-एक करके सारे पैकेट खोल डाले, आदिवासियों के कलामय हाथों से तैयार हुए आदिवासी चेहरे और लकडी की मूतियाँ उसके सामने थी। वह ठगी-सी खड़ी उन्हें देखती रह गयी। फिर एक मूर्ति को हाथ में उठाते हुए बोली- सचमुच बहुत खूबसूरत है।"[४३] अतः स्पष्ट है कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से ग्रामीण जीवन के अतिथ्य, सहजीवन तथा सामूहिक जीवन, सांस्कृतिक जीवन, परस्पर आत्मीय व्यवहार, नीति मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा कलात्मक जीवन आदि उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा की है, जो हमें समन्वीत जीवन की प्रेरणा देती है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन का जीता जागता चित्रण उनके दीर्घ अनुभवों का परिणाम है। उन्होंने ग्रामीण जीवन में विद्यमान साम्प्रदायिकता, जातीय एवं धार्मिक भेदभाव, अंधविश्वास, चुनावी राजनीति, विधवा की दयनीयता, शोषण नीति आदि के साथ ग्राम जीवन की संस्कृति की महिमा उजागर कर ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिक्षेप किया है।

संदर्भ संकेत

१) शद्विता, धर्मवीर भारती, ग्रंथावली-०६- पृ-८४.
२) समग्र उपन्यास (लौटे हुए मुसाफिर)- कमलेश्वर- पृ-११५.
३) वही - पृ-१२१.
४) वही -- पृ-१४२.
५) कितने पाकिस्तान-कमलेश्वर- पृ- ११०.
६) समग्र उपन्यास (काली आँधी) -कमलेश्वर -पृ-४३२.
७) लौटे हुए मुसाफिर- कमलेश्वर -पृ-८९.
८) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश- अनिल काले- पृ-३२.
९) समग्र उपन्यास (एक सड़क सत्तावन गलियाँ)- कमलेश्वर-पृ-७५.
१०) वही -पृ-१८.
११) वही -पृ-३८.

१२) समग्र उपन्यास (लौटे हुए मुसाफिर)- कमलेश्वर- पृ-१२७.
१३) कितने पाकिस्तान- कमलेश्वर- पृ-१०३.
१४) धर्मवीर भारती-युगचेतना और अभिव्यक्ति- डॉ.सरिता शुक्ल- पृ-३६.
१५) समग्र उपन्यास (समुद्र में खोया हुआ आदमी) कमलेश्वर- पृ-३२९.
१६) समग्र उपन्यास-(सुबह दोपहर शाम) - कमलेश्वर -पृ-६११.
१७) समग्र उपन्यास (वही बात) -कमलेश्वर-पृ-५२९.
१८) अम्मा- कमलेश्वर- पृ-७१.
१९) हिन्दी उपन्यास- डॉ.सुरेश सिन्हा- पृ-१२५.
२०) कमलेश्वर अभी जिंदा है- कमलेश्वर- पृ-४३.
२१) भारतीय समाजशास्त्र- ए.आर.देसाई- पृ-४६.
२२) समग्र उपन्यास (काली आँधी)- कमलेश्वर- पृ-३९१.
२३) समग्र उपन्यास (एक सड़क सत्तावन गलियाँ)- कमलेश्वर -पृ- २७
२४) समग्र उपन्यास (लौटे हुए मुसाफिर)- कमलेश्वर-- पृ-९३.
२५) बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन-डॉ.क्षितिज यादवराव धुमाळ- पृ-१३८.
२६) अम्मा-कमलेश्वर- पृ-६७.
२७) वही -पृ- ६७.
२८) वही -पृ-६८.
२९) समग्र उपन्यास (आगामी अतीत) -कमलेश्वर- पृ-४६६.
३०) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना- डॉ.ज्ञानचन्द्र गुप्त- पृ-६५.
३१) समग्र उपन्यास (सुबह शाम दोपहर) -कमलेश्वर- पृ-५७७.
३२) वही -पृ-५७७.
३३) समग्र उपन्यास (समुद्र में खोया हुआ आदमी)- कमलेश्वर- पृ-३०३.
३४) वही -पृ-३०३.
३५) वही -पृ-३०३.
३६) समग्र उपन्यास (रेगिस्तान)- कमलेश्वर- पृ- ६७७.
३७) समग्र उपन्यास (एक सड़क सत्तावन गलियाँ)- कमलेश्वर-- पृ-७०.
३८) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेष- अनिल काले- पृ-४१.
३९) समग्र उपन्यास (एक सड़क सत्तावन गलियाँ **)-** कमलेश्वर-पृ-१२.
४०) समग्र उपन्यास (लौटे हुए मुसाफिर) -कमलेश्वर-पृ- १५४.
४१)समग्र उपन्यास (तीसरा आदमी) -कमलेश्वर-पृ-२७.
४२)अनबीता व्यतीत- कमलेश्वर- पृ-२७.
४३)वही बात- कमलेश्वर- पृ-५२६.